



भारत सरकार
जल शक्ति मंत्रालय
जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग
केन्द्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला
खड़कवासला, पुणे - 411024



जल अनुसंधान त्रैमासिक समाचार



संपादक मंडल:

- | | |
|---|----------------|
| 1. डॉ. आर. एस. काँकरा, निदेशक | - मुख्य संपादक |
| 2. श्री विशाल दिलीप दोंड, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी | - संपादक |
| 3. श्री विकास कुमार शुक्ला, वैज्ञानिक “डी” | - सदस्य |
| 4. कुमारी माधवी गजरे, वैज्ञानिक “बी” | - सदस्य |
| 5. श्रीमती अनामिका साहा, सहायक अनुसंधान अधिकारी | - सदस्य |

संकलन एवं प्रकाशन: केन्द्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला, खड़कवासला, पुणे

वेबसाइट : www.cwprs.gov.in दूरध्वनि : 020-2410 3200, 2410 3233 फैक्स : 020 24381004 ईमेल- : director@cwprs.gov.in

विषय सूची

- भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय मानकीकरण पर ध्यान केंद्रित : केन्द्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला में पंप मानकों पर 25वीं राष्ट्रीय बैठक का उद्घाटन
- केन्द्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला ने आर्ट ऑफ लिविंग के प्रशिक्षकों द्वारा उत्साहवर्धक सत्रों के साथ अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया
- केन्द्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला को स्वच्छता पखवाड़ा पुरस्कार 2024 में तीसरे सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले संगठन पुरस्कार से सम्मानित किया गया
- “पोलावरम परियोजना प्राधिकरण” का केन्द्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला पुणे दौरा: हाइड्रोलिक मॉडल अध्ययन पर चर्चा
- केन्द्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला, पुणे में प्रथम संचालन समिति की बैठक
- “तटीय प्रबंधन को बढ़ावा”: केन्द्रीय जल आयोग संवाद 2024 में केन्द्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला की अंतर्दृष्टि
- निर्माण कार्य फिर से शुरू करने के लिए केन्द्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला द्वारा नांदेड़ में लेंडी बांध का निरीक्षण
- केन्द्रीय जल एवं विद्युत अनुसंधान शाला द्वारा आईएसओ/टीसी 113 प्लेनरी मीटिंग में हाइड्रोमेट्री मानकों का समर्थन
- एनडीए के नौसेना कैडेटों ने हाइड्रोलिक्स और इंजीनियरिंग में केन्द्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला विशेषज्ञता का अध्ययन
- केन्द्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला के वैज्ञानिक ने आईएसओ बैठक में जल मात्रा माप के मानकीकरण में योगदान
- नेपाली जल संसाधन विभाग के अधिकारियों द्वारा केन्द्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला की हाइड्रोलिक अनुसंधान विशेषज्ञता का अध्ययन
- केन्द्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला के वैज्ञानिकों ने दक्षिणी गुजरात में सी.एम.आई.एस. परियोजना के लिए समुद्र तट प्रोफाइलिंग का कार्य
- सी.एम.आई.एस. पहल के माध्यम से तटीय संरक्षण को बढ़ाना: केन्द्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला की भूमिका और दृष्टि
- स्थायित्व के लिए नदी पुनरुद्धार को आगे बढ़ाना: शांति के लिए जल पैनल से अंतर्दृष्टि
- केन्द्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला की गतिविधियों और उपलब्धियों की मुख्य विशेषताएं
- तकनीकी अनुसंधान रिपोर्ट
- सेवा-निवृत्तियों की सूची
- नई नियुक्तियों की सूची

संदेश



केन्द्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला के तिमाही बुलेटिन के इस द्वितीय संस्करण में आपका स्वागत है। यह रिपोर्ट हमें एक अवसर प्रदान करता है कि हम पिछले कुछ महीनों में प्राप्त उपलब्धियों और भविष्य की दिशा की झलक साझा कर सकें।

हमारे संस्थान ने इस तिमाही में कई महत्वपूर्ण मील के पत्थर पार किए हैं। हमारे वैज्ञानिकों और अभियंत्रिकों ने नई तकनीकी ऊँचाइयों को छूने के लिए निरंतर प्रयास किए हैं, जिससे जल संसाधन प्रबंधन, नदी नहर सुधार, और विद्युत उत्पादन में उत्कृष्टता प्राप्त हो रही है। इस बीच, हमने कई महत्वपूर्ण परियोजनाओं में प्रगति की है और नए शोधों की दिशा में भी कदम बढ़ाए हैं।

मुझे यह बताते हुए अत्यंत गर्व हो रहा है कि, केन्द्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला, पुणे में संचालन समिति की पहली बैठक सफलता पूर्वक आयोजित की गई। इस बैठक की अध्यक्षता माननीय सुश्री देबाश्री मुखर्जी, आई.ए.एस., जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग, जल शक्ति मंत्रालय की सचिव जी द्वारा की गई। इस बैठक का मुख्य उद्देश्य हमारी अनुसंधान शाला की कार्य क्षमताओं को बढ़ाने के लिए नीति और रणनीतिक मुद्दों की समीक्षा और मार्गदर्शन प्रदान करना था।

हमारी टीम की मेहनत और समर्पण ही हमारी सफलता का मूल आधार है। आप सभी की लगातार मेहनत और उत्कृष्टता की वजह से हम अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर पा रहे हैं। मैं आपके समर्पण और मेहनत के लिए आपको धन्यवाद देना चाहता हूँ और आशा करता हूँ कि हम आगे भी इसी तरह के अद्वितीय परिणाम प्राप्त करते रहेंगे।

आगे की दिशा में, हमारी प्राथमिकता रहेगी कि हम अपने अनुसंधान और विकास को और अधिक प्रासंगिक और प्रभावशाली बनाएं। हम निरंतर नए विचारों और नवाचारों को प्रोत्साहित करेंगे, ताकि हम जल और ऊर्जा क्षेत्र में वैश्विक मानकों को बनाए रख सकें।

आप सभी की निरंतर कोशिशों और उत्साह के लिए एक बार फिर से धन्यवाद। हम साथ मिलकर भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार हैं और मुझे पूरा विश्वास है कि हम अपने सामूहिक प्रयासों से नया कीर्तिमान स्थापित करेंगे।

डॉ. आर.एस. काँकरा
निदेशक

भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय मानकीकरण पर ध्यान केंद्रित :

केन्द्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला में पंप मानकों पर 25वीं राष्ट्रीय बैठक का उद्घाटन का आयोजन

केन्द्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला के निदेशक डॉ. आर.एस. काँकरा और भारतीय मानक ब्यूरो (बीआईएस) के पंप अनुभागीय समिति के अध्यक्ष श्री ए.के. निजावन ने 25 जून 2024 को अनुसंधान शाला में आयोजित पंप अनुभागीय समिति की 25वीं राष्ट्रीय बैठक का उद्घाटन किया। बैठक में पंपों से संबंधित विभिन्न भारतीय मानकों को संशोधित करने और अंतिम रूप देने पर ध्यान केंद्रित किया गया। इसके अतिरिक्त, पंप उद्योग में अंतर्राष्ट्रीय मानकीकरण पर चर्चा हुई। इस कार्यक्रम में पूरे भारत से सदस्यों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया, जिससे राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर पंप मानकों को आगे बढ़ाने पर व्यापक विचार-विमर्श और आदान-प्रदान की सुविधा मिली।



केन्द्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला ने आर्ट ऑफ लिविंग के प्रशिक्षकों द्वारा उत्साहवर्धक सत्रों के साथ अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया

21 जून 2024 को, केन्द्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला के वैज्ञानिकों, अधिकारियों और कर्मचारियों ने उत्साह के साथ अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया। आर्ट ऑफ लिविंग, पुणे के योग प्रशिक्षकों ने अनुसंधान शाला में योग और ध्यान के उत्साहवर्धक सत्र आयोजित किए, जिससे प्रतिभागियों को एक ताज़ा और समृद्ध अनुभव मिला। इस कार्यक्रम ने अनुसंधान शाला समुदाय को एक साथ आने, योग का अभ्यास करने और इस प्राचीन अनुशासन के समग्र लाभों को अपनाने का एक शानदार अवसर प्रदान किया, जिससे अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का सार्थक पालन हुआ।



केन्द्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला “स्वच्छता पखवाड़ा पुरस्कार 2024” में तीसरा सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाला संगठन

केन्द्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला के निदेशक डॉ. आर.एस. काँकरा को स्वच्छता पखवाड़ा पुरस्कार 2024 समारोह के दौरान तीसरे सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले संगठन के पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस पुरस्कार ने 16 मार्च से 31 मार्च, 2024 तक आयोजित स्वच्छता पखवाड़ा के दौरान सीडब्ल्यूपीआरएस को उसके उत्कृष्ट योगदान के लिए मान्यता दी। 11 जून, 2024 को जल शक्ति मंत्रालय के DoWR, RD&GR के सचिव द्वारा यह पुरस्कार प्रदान किया गया। यह सम्मान स्वच्छता और सफाई को बढ़ावा देने में अनुसंधान शाला के समर्पित प्रयासों को रेखांकित करता है। स्वच्छता पखवाड़ा के दौरान प्रमुख गतिविधियों में कार्यालय परिसर और स्टाफ कॉलोनी की सफाई, खड़कवासला बांध पर स्वच्छता अभियान चलाना और दिव्यांगों की पहुंच के लिए सुविधाओं की समीक्षा करना शामिल था। अनुसंधान शाला ने हरित वातावरण को बढ़ावा देने के लिए स्टाफ कॉलोनी में पौधे लगाकर पर्यावरणीय पहलों पर भी ध्यान केंद्रित किया। सामुदायिक आउटरीच प्रयासों में स्थानीय स्कूलों को 'स्वच्छता' को बढ़ावा देने वाले विषयगत अभियानों में शामिल किया गया, जिसमें ड्राइंग और पेंटिंग प्रतियोगिताएं, रैलियां, नुक्कड़ नाटक तथा नारे, निबंध और प्रश्नोत्तरी जैसी शैक्षिक प्रतियोगिताएं शामिल थीं, जिनका उद्देश्य एकल उपयोग प्लास्टिक (एसयूपी) को कम करना और छात्रों में स्वच्छता की आदतें विकसित करना था।



पोलावरम परियोजना प्राधिकरण का केन्द्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला पुणे दौरा: हाइड्रोलिक प्रतिमान अध्ययन पर चर्चा



16 और 17 अप्रैल 2024 के दौरान, पोलावरम परियोजना प्राधिकरण के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री शिव नंदन कुमार ने मुख्य अभियंता श्री राजेश कुमार और उप निदेशक श्री एम रवि के साथ केन्द्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला, पुणे में पोलावरम भौतिक प्रतिमान का दौरा किया। उनके दौरे का उद्देश्य पोलावरम परियोजना से संबंधित हाइड्रोलिक प्रतिमान अध्ययन के विभिन्न पहलुओं के बारे में अनुसंधान शाला के वैज्ञानिकों के साथ विस्तृत चर्चा करना था। चर्चा भौतिक प्रतिमान के जलीय प्रदर्शन और व्यवहार का आंकलन करने पर केंद्रित थी, जो पोलावरम परियोजना के लिए वास्तविक दुनिया की स्थितियों का अनुकरण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस दौरे ने पोलावरम परियोजना प्राधिकरण टीम को अनुसंधान शाला की जलीय प्रतिमानन विशेषज्ञता से प्राप्त निष्कर्षों और सिफारिशों में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने का अवसर प्रदान

किया। पोलावरम जैसी बड़े पैमाने की जल संसाधन परियोजनाओं की इष्टतम अभिकल्प और परिचालन प्रभावकारिता सुनिश्चित करने के लिए यह बातचीत महत्वपूर्ण सिद्ध हुई।

केन्द्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला पुणे के रणनीतिक दृष्टिकोण को मजबूत करने हेतु संचालन समिति की प्रथम बैठक



सुश्री देबाश्री मुखर्जी, आईएएस, सचिव (डीओडब्ल्यूआर और आरडी एंड जीआर) के नेतृत्व में केन्द्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला की संचालन समिति की पहली बैठक का उद्देश्य केन्द्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला की क्षमताओं को बढ़ाने के लिए नीति और

रणनीतिक मामलों की समीक्षा और मार्गदर्शन करना था। 14 मई, 2024 को अनुसंधान शाला, पुणे में आयोजित, उपस्थित लोगों में जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग, जल शक्ति मंत्रालय के संयुक्त सचिव (प्रशासन) और संयुक्त सचिव (एफए) जैसे वरिष्ठ अधिकारी, महाराष्ट्र, केरल और तेलंगाना के जल संसाधन विकास के प्रमुख सचिव और सी.डब्ल्यू.सी., आई.एम.डी., सी.एस.एम.आर.एस., एन.आई.ओ.टी. और एम.ए.एन.आई.टी., भोपाल के प्रतिनिधि शामिल थे। केन्द्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला के निदेशक डॉ. आर. एस. कांकरा ने सदस्य-सचिव के रूप में कार्य किया।



बैठक में जल संसाधन प्रबंधन और अनुसंधान में सहयोगी प्रयासों के माध्यम से अनुसंधान शाला को मजबूत करने पर ध्यान केंद्रित किया गया। प्रयोगशाला में मौसम संबंधी संसर्गों के एक साथ स्वचालित अंशांकन सहित उन्नत सुविधाएं हैं। इस यात्रा का उद्देश्य मौसम संबंधी उपकरणों

के सटीक अंशांकन को सुनिश्चित करने में प्रयोगशाला की क्षमताओं का आकलन करना था, जो सटीक मौसम पूर्वानुमान और जल विज्ञान संबंधी निगरानी के लिए महत्वपूर्ण है। उन्होंने 18-20 दिसंबर, 2024 को ISH के सहयोग से अनुसंधान शाला द्वारा आयोजित 29वें अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन HYDRO 2024 के लिए पहले सूचना बुलेटिन का भी अनावरण किया, जो आयोजन की तैयारी में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है।

विमोचन समारोह में वरिष्ठ अधिकारियों और वैज्ञानिकों ने भाग लिया और प्रतिष्ठित सम्मेलन के पीछे सहयोगी प्रयासों पर जोर दिया। सचिव महोदया जी ने डॉ. आर.एस. कांकरा और अन्य समिति सदस्यों के साथ अनुसंधान शाला में विभिन्न प्रतिमानों और सुविधाओं का दौरा किया, जिसमें कोशी नदी का भौतिक प्रतिमान, हीराकुंड उत्प्लव प्रतिमान, तपोवन विष्णुगढ़ जलाशय फ्लशिंग प्रतिमान, कल्पसार हैंगर और वेल लॉगिंग सुविधाएं शामिल हैं। इस दौरे का उद्देश्य जलीय अभियांत्रिकी, जलाशय प्रबंधन और जल विज्ञान अनुसंधान में अनुसंधान शाला की विशेषज्ञता को प्रदर्शित करना था तथा उनके उन्नत बुनियादी ढांचे और अनुसंधान पहलों पर प्रकाश डालना था। अपनी यात्रा के दौरान, सचिव महोदया जी द्वारा जल संसाधन अनुसंधान, भारत सरकार की प्रमुख परियोजनाओं और अनुसंधान शाला के भविष्य के दृष्टिकोण और योगदान पर अनुसंधान शाला के वैज्ञानिकों को संबोधित किया। उन्होंने अनुसंधान शाला में जल प्रबंधन और अनुसंधान में रणनीतिक पहलों, अनुसंधान प्राथमिकताओं और सहयोगी प्रयासों पर चर्चा करने के लिए वैज्ञानिकों और अधिकारियों के साथ एक संवादात्मक सत्र में भाग लिया।

प्रतिष्ठित अतिथियों का दौरा

तटीय प्रबंधन को बढ़ावा: केंद्रीय जल आयोग संवाद 2024 में केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला की अंतर्दृष्टि

केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला ने 18 अप्रैल 2024 को केंद्रीय जल आयोग (सीडब्ल्यूसी) द्वारा आयोजित पहली तिमाही वार्ता के दौरान महाराष्ट्र राज्य के लिए तटीय क्षेत्र प्रबंधन पर अपनी विशेषज्ञता और अंतर्दृष्टि प्रस्तुत की। इस वार्ता का उद्देश्य राज्य और केंद्र सरकार के संस्थानों के बीच समन्वय बढ़ाना था। पिछले तीन दशकों में अनुसंधान शाला ने महाराष्ट्र की 740 किलोमीटर लंबी तटरेखा के साथ तटीय सुरक्षा के लिए तकनीकी और आर्थिक रूप से व्यवहार्य समाधान प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनके योगदान में 180 से अधिक कटाव-प्रवण स्थलों पर अध्ययन करना शामिल है, जिसके परिणामस्वरूप समुद्री भित्ति वक्षण, ग्रीन और जियोटेक्ब जैसे साइट-विशिष्ट समाधानों के लिए सिफारिशों की गईं। ये प्रयास अनुप्रयुक्त अनुसंधान और रणनीतिक सिफारिशों के माध्यम से तटीय कटाव चुनौतियों का समाधान करने के लिए अनुसंधान शाला की प्रतिबद्धता को रेखांकित करते हैं।



निर्माण कार्य फिर से शुरू करने के लिए केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला द्वारा नांदेड़ में लेंडी बांध का निरीक्षण



केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला के वैज्ञानिकों द्वारा लेंडी अंतरराज्यीय परियोजना में स्थित मिट्टी के बांध का व्यापक निरीक्षण किया, जो महाराष्ट्र के नांदेड़ में गोदावरी मराठवाड़ा सिंचाई विकास निगम (जी.एम.आई.डी.सी.) के प्रबंधन के अधीन है। उनका प्राथमिक उद्देश्य बांध और उससे जुड़ी संरचनाओं की वर्तमान स्थिति का गहन मूल्यांकन करना था। इस निरीक्षण में बांध की स्थिरता, संरचनात्मक अखंडता

और किसी भी संभावित मुद्दे को निर्धारित करने के लिए विस्तृत जांच शामिल थी जो इसकी कार्यक्षमता या सुरक्षा को प्रभावित कर सकती थी। बांध की भौतिक स्थिति का मूल्यांकन करने के अलावा, वैज्ञानिकों का उद्देश्य निर्माण गतिविधियों को फिर से शुरू करने से पहले आवश्यक शोध अध्ययन को औपचारिक रूप देना था। ये अध्ययन संभवतः भू-तकनीकी जांच, जल विज्ञान आंकलन और पर्यावरणीय प्रभावों जैसे क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करेंगे। इस तरह के शोध यह सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण हैं कि भविष्य में कोई भी निर्माण कार्य सुरक्षित और प्रभावी ढंग से आगे बढ़ सके, जोखिमों को कम किया जा सके और निरीक्षण के दौरान पहचानी गई संभावित चुनौतियों का समाधान किया जा सके।

केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला ने आईएसओ/टीसी 113 प्लेनरी बैठक में हाइड्रोमेट्री मानकों का समर्थन



केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला के निदेशक और बीआईएस-डब्ल्यूआरडी 1 – आर्द्रता मापन अनुभागीय समिति के अध्यक्ष डॉ. आर. एस. काँकरा ने 22 अप्रैल, 2024 को आईएसओ/टीसी 113 – आर्द्रता मापन की 32वीं पूर्ण बैठक के उद्घाटन समारोह में उद्घाटन भाषण दिया। यह कार्यक्रम बी.आई.एस. (भारतीय मानक

ब्यूरो) डब्ल्यू.आर.डी. (जल संसाधन विभाग) द्वारा आयोजित किया गया था और नई दिल्ली में इंडिया हैबिटेड सेंटर में आयोजित किया गया था। अपने संबोधन के दौरान, डॉ. आर. एस. काँकरा ने जलवायु परिवर्तन, जनसंख्या वृद्धि और पर्यावरण क्षरण जैसी समकालीन चुनौतियों का समाधान करने में सटीक और विश्वसनीय हाइड्रोमेट्रिक डेटा और हाइड्रोमेट्रिक मानकों के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि जल संसाधनों के प्रभावी प्रबंधन और सतत विकास सुनिश्चित करने के लिए ये मानक अपरिहार्य हैं। डॉ. आर. एस. काँकरा ने आईएसओ/टीसी 113 की गतिविधियों में डब्ल्यू.आर.डी. 1 और अनुसंधान शाला द्वारा निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका पर भी प्रकाश डाला। ये संगठन आर्द्रता मापन से संबंधित अंतर्राष्ट्रीय मानकों के विकास और कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं, जिससे जल मापन प्रथाओं में वैश्विक सहयोग और एकरूपता को बढ़ावा मिलता है। डॉ. आर. एस. काँकरा के उद्घाटन भाषण ने वैश्विक पर्यावरणीय चुनौतियों के बीच जल संसाधन प्रबंधन की जटिल और उभरती मांगों को पूरा करने में मानकीकृत हाइड्रोमेट्रिक डेटा के महत्व को व्यक्त किया।

राष्ट्रीय रक्षा अकादमी के नौसेना कैडेटों द्वारा केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला का अध्ययन दौरा

अपने अध्ययन दौर के हिस्से के रूप में, राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (एन.डी.ए.), खड़कवासला के 41 नौसेना छात्रों और 1 अधिकारी ने 22 अप्रैल, 2024 को केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला का दौरा किया। इस यात्रा का उद्देश्य जलगत विज्ञान, जल संसाधन, तटीय और नदी अभियांत्रिकी में अनुसंधान शाला की विशेषज्ञता को उजागर करना था। प्रतिनिधि



मंडल को विशाखापत्तनम पोर्ट प्रतिमान, मुंबई पोर्ट प्रतिमान और कंट मीटर कैलिब्रेशन लैब जैसे भौतिक प्रतिमान सहित विभिन्न सुविधाओं का पता लगाने का अवसर मिला। इन प्रतिमानों द्वारा अध्ययन के इन क्षेत्रों में अनुसंधान शाला के महत्वपूर्ण योगदान और क्षमताओं को प्रदर्शित किया गया।

केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला के वैज्ञानिक द्वारा आईएसओ बैठक में जल मात्रा माप के मानकीकरण में योगदान

केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला के वैज्ञानिक डी श्री पी एस कुंजीर ने 23 अप्रैल, 2024 को आईएसओ (इंडिया हैबिटेड सेंटर), नई दिल्ली में आईएसओ/टीसी 113 हाइड्रोमेट्री की 32वीं पूर्ण बैठक के दौरान आईएसओ/टीसी 113/एससी1/डब्ल्यूजी-6 की बैठक में भाग लिया। डब्ल्यूजी-6 का ध्यान 'झीलों और जलाशयों में पानी की मात्रा और जल स्तर के निर्धारण' पर है। बैठक का मुख्य उद्देश्य सदस्य देशों द्वारा उठाई गई टिप्पणियों को संबोधित करके और उनका समाधान करके एक दस्तावेज को अंतिम रूप देना था। चर्चा विभिन्न जल निकायों में पानी की मात्रा और स्तरों के सटीक मापन और आंकलन के लिए महत्वपूर्ण पद्धतियों और मानकों पर आम सहमति प्राप्त करने पर केंद्रित थी। डब्ल्यूजी-6 का ध्यान 'झीलों और जलाशयों में पानी की मात्रा और जल स्तर के निर्धारण' पर है।



प्रारंभिक कार्यक्रम: सतत विकास के लिए जलाशयों में अवसादन प्रबंधन पर राष्ट्रीय कार्यशाला, 2-3 मई, 2024



2-3 मई 2024 को चंडीगढ़ के इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया) में आयोजित "सतत विकास के लिए जलाशयों में अवसादन प्रबंधन" पर राष्ट्रीय कार्यशाला, आगामी ICOLD 2024 सम्मेलन की प्रस्तावना के रूप में कार्य करती है। कार्यशाला एक ऐसा मंच था जहाँ विशेषज्ञ और इंजीनियर जलाशयों में अवसादन प्रबंधन से संबंधित महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा करने के लिए एकत्र हुए। पुणे में अनुसंधान शाला (केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला) के वैज्ञानिक 'डी' श्री एम. के. वर्मा ने कार्यक्रम में मुख्य व्याख्यान देकर महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी विशेषज्ञता संभवतः अवसादन प्रबंधन के तकनीकी और व्यावहारिक पहलुओं पर केंद्रित थी, जो अनुसंधान शाला के क्षेत्र में व्यापक शोध और अनुभव से ली गई थी। कार्यशाला में

उपस्थित लोगों के बीच आकर्षक और सार्थक चर्चाएँ हुईं, जो जल प्रबंधन, अभियांत्रिकी और संबंधित क्षेत्रों में शामिल विभिन्न संगठनों का प्रतिनिधित्व करते थे। ये चर्चाएँ महत्वपूर्ण थीं क्योंकि उन्होंने न केवल अवसादन प्रबंधन में वर्तमान चुनौतियों पर प्रकाश डाला, बल्कि नवीन समाधानों और सर्वोत्तम प्रथाओं की भी खोज की। यह आयोजन ICOLD 2024 के लिए एक मूल्यवान अग्रदूत के रूप में कार्य करता है, जिसने सम्मेलन में अपेक्षित व्यापक अंतर्राष्ट्रीय चर्चाओं और सहयोगों के लिए मंच तैयार किया। ज्ञान और विचारों के ऐसे आदान-प्रदान को बढ़ावा देकर, कार्यशाला का उद्देश्य जल संसाधनों और जलाशय प्रबंधन से संबंधित सतत विकास लक्ष्यों की दिशा में योगदान करना था। कुल मिलाकर, तलछट प्रबंधन पर राष्ट्रीय कार्यशाला जटिल जल प्रबंधन मुद्दों को संबोधित करने में हितधारकों के सक्रिय दृष्टिकोण का प्रमाण थी, जिसने उन अंतर्दृष्टि और प्रगति के लिए आधार तैयार किया, जिन्हें ICOLD 2024 के दौरान और अधिक खोजा और विस्तारित किया जाएगा।

नेपाली जल संसाधन विभाग के अधिकारियों द्वारा केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला का अध्ययन दौरा



23 अप्रैल, 2024 को, नेपाल सरकार के 20 जल संसाधन विकास अधिकारियों के एक दल ने राष्ट्रीय जल अकादमी, पुणे में एक प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान अपने अध्ययन दौरे के हिस्से के रूप में केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला का दौरा किया। इस दौरे का उद्देश्य

प्रतिनिधि मंडल को अनुसंधान शाला की हाइड्रोलिक अनुसंधान गतिविधियों से परिचित कराना था। उन्होंने भूटान में पुनात्सांगचू-1 जलविद्युत परियोजना के लिए उत्प्लव प्रतिमान, भूटान में खोलोंगचू जलविद्युत परियोजना के लिए डिसिल्टिंग कक्ष और धारा वेग मापी अंशांकन प्रयोगशाला सहित विभिन्न सुविधाओं का पता लगाया। इसके अतिरिक्त, उन्होंने एक प्रदर्शनी हॉल का भी दौरा किया, जिसमें हाइड्रोलिक इंजीनियरिंग में अनुसंधान शाला की विविध प्रकार की सुविधाओं और क्षमताओं को प्रदर्शित किया गया था।

केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला के वैज्ञानिकों द्वारा दक्षिणी गुजरात में सीएमआईएस परियोजना के लिए समुद्र तट रेखा चित्रण का कार्य

गुजरात में नानी दांती-मोती दांती साइट पर तैनात केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला के वैज्ञानिक सी.एम.आई.एस. परियोजना के हिस्से के रूप में समुद्र तट की रूपरेखा तैयार कर रहे हैं। यह पहल जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग के तहत दक्षिणी गुजरात के लिए जल संसाधन सूचना प्रणाली (डीडब्ल्यूआरआईएस) विकसित करने के लिए महत्वपूर्ण है। समुद्र तट की रूपरेखा में कटाव पैटर्न और तटरेखा स्थिरता का आकलन करने के लिए तटरेखा सुविधाओं का विस्तृत माप शामिल है, जो क्षेत्र में तटीय प्रबंधन और बुनियादी ढांचे की योजना के लिए आवश्यक डेटा प्रदान करता है।



सी.एम.आई.एस. पहल के माध्यम से तटीय संरक्षण को बढ़ाना: केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला की भूमिका और दृष्टि



केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला के अपर निदेशक डॉ. प्रभात चंद्रा ने गुजरात के तटीय संरक्षण पहलों में अनुसंधान शाला की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया। गुजरात और महाराष्ट्र दोनों के लिए सी.एम.आई.एस. (तटीय निगरानी और सूचना प्रणाली) परियोजनाओं में उनकी भागीदारी पर जोर दिया। 25 अप्रैल, 2024 को गांधीनगर में आयोजित त्रैमासिक वार्ता बैठक के दौरान इस पर प्रकाश डाला गया, जिसकी अध्यक्षता गुजरात के जल संसाधन विभाग (डब्ल्यू.आर.डी.) के सचिव और केंद्रीय जल आयोग (सी.डब्ल्यू.सी.) के मुख्य अभियंता ने की। डॉ. चंद्रा ने पर्यावरणीय चुनौतियों और बुनियादी ढांचे के विकास के खिलाफ तटीय क्षेत्रों को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने और उनकी सुरक्षा करने के लिए एक एकीकृत तटीय प्रबंधन योजना की महत्वपूर्ण आवश्यकता पर जोर दिया।

स्थायित्व के लिए नदी पुनरुद्धार को आगे बढ़ाना: शांति के लिए जल पैनल से अंतर्दृष्टि

केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला के वैज्ञानिक 'सी' श्री कुलदीप मलिक ने "विश्व जल दिवस समारोह" के हिस्से के रूप में 25 अप्रैल, 2024 को इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियर्स, पुणे चैप्टर द्वारा आयोजित "शांति के लिए जल" विषय पर एक पैनल चर्चा में भाग लिया। चर्चा के दौरान, उन्होंने नदी बहाली पहलों की तत्काल आवश्यकता और खाद्य-ऊर्जा-जल संबंध को बनाए रखने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। रिवरफ्रंट विकास और पारिस्थितिक संरक्षण के बीच आवश्यक नाजुक संतुलन पर जोर देते हुए, उन्होंने यह सुनिश्चित करने के महत्व पर जोर दिया कि विकास के प्रयास नदियों के प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र से समझौता न करें। उनकी अंतर्दृष्टि ने जल प्रबंधन, पर्यावरणीय स्थिरता और सामाजिक-आर्थिक स्थिरता के बीच महत्वपूर्ण संबंधों को रेखांकित किया, जल संसाधन प्रबंधन के लिए एकीकृत दृष्टिकोण पर प्रतिक्रिया दी।



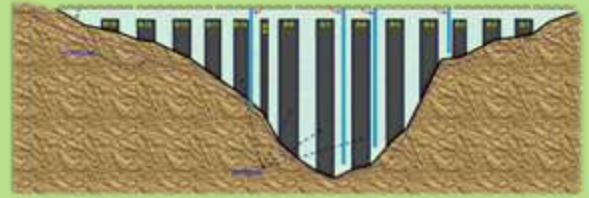
महाराष्ट्र के सतपति में तटीय कटाव विश्लेषण और प्रबंधन के लिए दिशात्मक वेव राइडर बॉय की तैनाती

22 मई 2024 को, अनुसंधान शाला (केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला) ने जल संसाधन, नदी विकास एवं गंगा संरक्षण विभाग (DoWR, RD&GR) द्वारा जल संसाधन सूचना प्रणाली के विकास के अंतर्गत तटीय प्रबंधन सूचना प्रणाली (CMIS) के भाग के रूप में महाराष्ट्र के सतपति में एक दिशात्मक तरंग राइडर बॉय स्थापित किया। निष्कर्ष में, महाराष्ट्र के सतपति में अनुसंधान शाला द्वारा दिशात्मक तरंग राइडर बॉय की तैनाती तटीय कटाव चुनौतियों से निपटने की दिशा में एक सक्रिय दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करती है। उन्नत निगरानी प्रौद्योगिकी का उपयोग करके और डेटा-संचालित अंतर्दृष्टि का लाभ उठाकर, यह पहल तटीय क्षेत्रों में प्राकृतिक खतरों के खिलाफ सतत तटीय विकास और लचीलेपन के लिए भारत की प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है। एकत्र किए गए डेटा भारत के तटीय संसाधनों के भविष्य के प्रबंधन और संरक्षण के लिए सूचित नीतियों और रणनीतियों को तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।



भंडारधारा बांध, महाराष्ट्र में यथा-स्थान घनत्व के आकलन के लिए वेदन छेद अभिलेखन

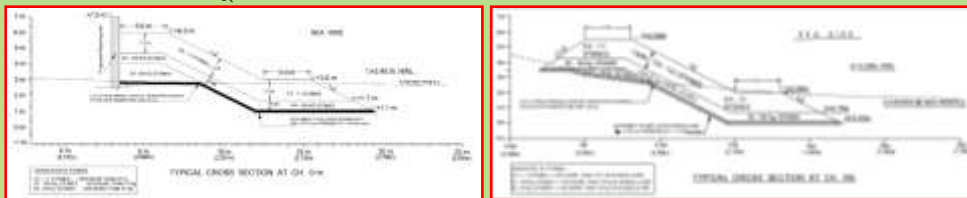
भंडारधारा (विल्सन बांध) बांध का निर्माण महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले में 'प्रवरा' नदी पर किया गया था। इसके ज्यामितीय निर्देशांक 19.5375° N और 73.7695° E हैं। भौगोलिक दृष्टि से यह जिला दक्खन के पठार का एक हिस्सा है जिसमें सह्याद्री पर्वत श्रृंखलाएँ शामिल हैं। बांध का निर्माण चिनाई द्वारा किया गया है जिसकी लंबाई 507 मीटर और सकल भंडारण क्षमता 11 टीएमसी है। हालाँकि, बांध का मुख्य उद्देश्य 57,000 हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई है, यह 10 मेगावाट बिजली भी पैदा करता है। उम्र बढ़ने के कारण बांध के निचले हिस्से में रिसाव देखा गया है। इसके अलावा यह भी देखा गया है कि जलाशय के जल स्तर में वृद्धि के साथ रिसाव में वृद्धि हुई है। बांध के मुख्य भाग से लगातार रिसाव के परिणामस्वरूप इसके घनत्व में कमी आ सकती है जिसके कारण बांध की स्थिरता प्रभावित हो सकती है। इन संकटों को देखते हुए परियोजना अधिकारियों ने केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला, पुणे से अनुरोध किया कि वे अध्ययन करें और रिसाव को नियंत्रित करने और बांध की संरचनात्मक स्थिरता में सुधार के लिए उपयुक्त उपचारात्मक उपाय सुझाएं। तब बांध के यथास्थान द्रव्यमान घनत्व का निर्धारण और इसमें संभावित कमजोर क्षेत्रों को चित्रित करने के लिए परमाणु वेदन छेद अभिलेखन का संचालन करने का प्रस्ताव किया गया था। तदनुसार, परमाणु घनत्व अभिलेखन के संचालन के लिए परियोजना अधिकारियों के परामर्श से केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला, पुणे द्वारा संबंधित बट्रेस के अनुरूप विभिन्न चेंजेज पर चार (4) एन एक्स आकार (76 मिमी) का वेदन छेद करने का सुझाव दिया गया था। इसके बाद परमाणु घनत्व अभिलेखन किया गया और नतीजों से पता चला कि प्रत्येक वेदन छेद में कई स्थानों पर घनत्व काफी कम हो गया है, जिसका संकेत बांध की लंबाई के साथ कई स्थानों पर बांध की ऊंचाई से बाहर होने वाले रिसाव से मिलता है, जिससे रिसाव पथ और कमजोर क्षेत्रों के अस्तित्व की पुष्टि हुई। प्रत्येक वेदन छेद के स्थान पर घनत्व भिन्नता का परिणाम, अभिपुरण मिश्रण अभिकल्प तय करने के लिए एक उपयोगी मापक है।



चित्र 1: वेदन छेद स्थानों के साथ भंडारधारा बांध का एल खंड

महाराष्ट्र में स्थित रत्नागिरी जिले की विभिन्न जगहों में तटीय सुरक्षा कार्य के डिजाइन के लिए डेस्क अध्ययन

पत्तन अभियंता ने रत्नागिरी जिले में स्थित 07 विभिन्न स्थलों (03 स्थल असगोली में और 04 स्थल बुद्धल, अंजन वेल भोईवाड़ी, कोंडकरुल और बोर्या) पर तटीय सुरक्षा प्रदान करने का प्रस्ताव दिया है। समुद्र तट प्रोफाइल, ज्वार, लहरों और मौजूदा साइट स्थितियों जैसे डेटा के आधार पर तटीय सुरक्षा कार्यों के लिए एक अभिकल्प अनुप्रस्थ काट विकसित करने के लिए डेस्क अध्ययन किए गए। सीताराम घर (असगोली), नक्षत्रवन (असगोली), वल्केश्वर मंदिर (असगोली), बुधल, अंजन वेल भोईवाड़ी, कोंडकरुल और बोर्या में प्रस्तावित तटीय सुरक्षा कार्य लगभग 120 मीटर, 210 मीटर, 200 मीटर, 210 मीटर, 210 मीटर, 120 मीटर और 150 मीटर लम्बा हैं। तदनुसार, कवच परत में 0.5 से 1.0 टन पत्थरों से युक्त तटीय सुरक्षा कार्य के अभिकल्प काट-छिद्र को विकसित करने के लिए डेस्क अध्ययन किए गए। महाराष्ट्र के रत्नागिरी जिले में तटीय सुरक्षा कार्यों के अभिकल्प के लिए +2.28 मीटर के औसत उच्च जलस्तर (एम.एच.डब्ल्यू.एल.) से ऊपर 1.22 मीटर के तूफान सहित +3.5 मीटर के उच्च जलस्तर (एच.डब्ल्यू.एल.) पर विचार किया गया है। समुद्री दीवार के सामने लगभग 1.90 मीटर की अधिकतम टूटती तरंग ऊंचाई को ध्यान में रखकर अध्ययन किया गया है।



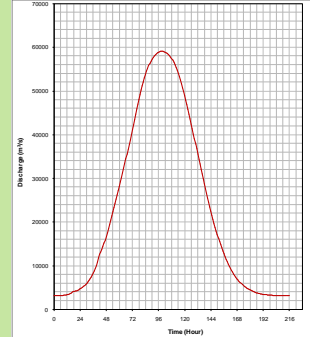
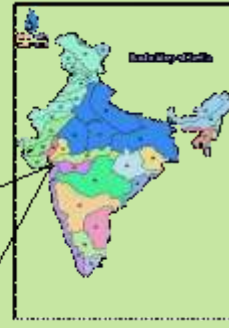
चित्र 2: रत्नागिरी में विभिन्न स्थलों पर तटीय सुरक्षा का विशिष्ट काट-छिद्र का चित्र

गुजरात के सूरत में गाँव रूंध-भाठा के पास प्रस्तावित पारंपरिक बैराज के लिए तापी नदी के अध्ययन क्षेत्र की बाढ़ अभिकल्प और जल स्तर का अनुमान

सूरत नगर निगम (एसएमसी) ने घरेलू प्रयोजन के लिए पानी की आवश्यकता को पूरा करने के सन्दर्भ में गुजरात के सूरत जिले में रूंध-भाठा गांव के पास तापी नदी पर एक बैराज बनाने का प्रस्ताव दिया था। इस उद्देश्य से बैराज के लिए सर्वेक्षण, जांच, योजना और निर्माण कार्य से संबंधित कार्य मेसर्स यूनिक्स कंस्ट्रक्शन, सूरत को सौंपा गया। इस संबंध में, मेसर्स यूनिक्स कंस्ट्रक्शन ने केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला, (सीडब्ल्यूपीआरएस) पुणे से (I) अवसादन और फ्लशिंग प्रतिमान अध्ययन, (II) संबंधित अध्ययन क्षेत्र के लिए बाढ़ अभिकल्प का अनुमान तथा जल स्तर का अध्ययन, और (III) प्रस्तावित बैराज की नींव में रिसाव और विरूपण पहलुओं का आंकलन करने के लिए भू-तकनीकी अध्ययन का अनुरोध किया। तदनुसार, सीडब्ल्यूपीआरएस के जल मौसम विज्ञान प्रभाग ने प्रस्तावित बैराज के लिए तापी नदी की अध्ययन क्षेत्र के लिए अभिकल्प बाढ़ अनुमान के साथ इसके संबंधित जल स्तर का अध्ययन किया।



चित्र 3: तापी नदी के अध्ययन क्षेत्र का सूचकांक मानचित्र



चित्र 4: प्रस्तावित बैराज का पीएमएफ बाढ़ जलारेख

बगलिहार बांध, रामबन, जम्मू-कश्मीर के पुनर्वास हेतु अध्ययन करने के लिए क्षतिग्रस्त भाग का निरीक्षण और चर्चा के लिए परियोजना स्थल का दौरा

जम्मू कश्मीर पावर डेवलपमेंट कॉरपोरेशन (जेकेपीडीसी) के तहत बगलिहार हाइड्रो इलेक्ट्रिक प्रोजेक्ट (बीएचईपी) चिनाब नदी पर एक अपवाह-नदी बिजली संयंत्र है और इसमें संयुक्त कंक्रीट गुरुत्व बांध के साथ 450 मेगावाट (3 x 150 मेगावाट) के 2 चरणों में 900 मेगावाट बिजली उत्पन्न करने की क्षमता है। यह बांध जम्मू और कश्मीर के रामबन जिले में स्थित है। बगलिहार बांध में 143 मीटर ऊंचा कंक्रीट गुरुत्व बांध शामिल है जो दो भूमिगत बिजली घर परिसरों को पोषण देता है। बगलिहार जल विद्युत परियोजना चरण-1 का भूमिगत बिजली घर परिसर गजपत पहाड़ी से लगभग 160 मीटर अंदर चंद्रकोट गांव के सामने चिनाब नदी के दाहिने किनारे पर स्थित है। बांध के शीर्ष को 843.0 मीटर के ऊंचाई स्तर पर रखा गया है जो अधिकतम जलाशय के स्तर से 3 मीटर का एक फ्री-बोर्ड प्रदान करता है। बांध के शीर्ष पर 8 मीटर चौड़ा सड़क मार्ग भी उपलब्ध कराया गया है। मुख्य अभियंता, बगलिहार के अनुरोध पर परियोजना के क्षतिग्रस्त क्षेत्रों के निरीक्षण के लिए परियोजना स्थल का दौरा और बगलिहार बांध के पुनर्वास के लिए अध्ययन करने के लिए चर्चा की गई। परियोजना अधिकारियों के साथ केन्द्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला के तीन वैज्ञानिकों द्वारा बांध की संरचना और ऊर्जा अपव्यय व्यवस्था के आसानी से पहुंच योग्य क्षेत्रों का निरीक्षण किया गया है। 4 से 9 मार्च 2024 की अवधि के दौरान बी.एच.ई.पी. परियोजना स्थल पर उपलब्ध ड्राइंग, डिजाइन रिपोर्ट और अन्य परीक्षण रिपोर्ट तथा पहले किया गए मरम्मत का अध्ययन किया गया। बांध से रिसाव को नियंत्रित करने, बांध निकाय में क्षति और बगलिहार जल विद्युत परियोजना के ऊर्जा अपव्यय व्यवस्था से संबंधित अध्ययन के लिए भी चर्चा की गई। बांध के भौतिक निरीक्षण के दौरान बांध की संरचना, टूनिंग बीम के कंक्रीट में क्षति के कई संकेत मिले हैं, जिससे कंक्रीट की गुणवत्ता के बारे में आशंकाएं बढ़ गई हैं। निरीक्षण के दौरान, यह उल्लेख किया गया है कि ब्लॉक नंबर 1, 1ए और 2 पर अनुप्रवाह की ओर देखी गई विकर्ण दरार की गंभीरता से जांच और निगरानी की आवश्यकता है तथा इस हिस्से में कंक्रीट की गुणवत्ता का आंकलन करने के लिए आवश्यक परीक्षण किए जाने चाहिए। बांध की संरचना से सीमेंट युक्त सामग्री के निष्कासन के कारण संरचना के अंदर उच्च दबाव की स्थिति बन रही है,

यदि यथा समय पर उपचार नहीं किया गया तो यह बांध की संरचनात्मक सुरक्षा को प्रभावित कर सकता है। शैल गैलरियां भी बहुत अधिक जलसंतुप्त दिख रही थीं, और ग्राउटिंग करके नींव के जल

निस्तरण को ठीक से समेकित करने की आवश्यकता है। इसलिए, रिसाव नियंत्रण के उपाय भी किए जाने चाहिए। उपर्युक्त समस्याओं के परिणाम स्वरूप बांध की ताकत कम हो जाती है, इसलिए बांध निकाय को उपचारात्मक उपाय प्रदान करने से पहले किए जाने वाले कुछ

नैदानिक परीक्षणों और विश्लेषण पर परियोजना अधिकारियों के साथ चर्चा की गई है।



चित्र 5: उत्प्लव मार्ग में क्षति क्षति का दृश्य



चित्र 6: टूनिंग बीम में दरार का दृश्य

केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला की गतिविधियों और उपलब्धियों की मुख्य विशेषताएं

- एम. जेड. क्रमर, एम. के. वर्मा, ए. पी. मेश्राम, “डिसिल्टिंग कक्ष की निपटान दक्षता के लिए भौतिक और संख्यात्मक प्रतिमान”, टेलर और फ्रांसिस ऑनलाइन द्वारा हाइड्रोलिक इंजीनियरिंग के आईएसएच जर्नल में प्रकाशित, 27 अप्रैल 2024
- वी. प्रभाकराचारी, आर. एस. एंडे, एन. सुनील नाइक, एम. फणी कुमार, डॉ. आर. एस. काँकरा द्वारा “Design and Development of Piston Type Displacer for Generation of Unidirectional Random Sea Wave Conditions in a 2D Wave Flume”, IOSR Journal of Mechanical and Civil Engineering में प्रकाशित, अप्रैल 2024
- श्रीधर बी., मारुलासिहप्पा, सुजय राघवेंद्र नागन्ना, प्रवीण के. एम., आदित्य तंत्री, गीता कुंतोजी, साद श्री सैममेन द्वारा “Strength Assessment of Structural Masonry Walls: Analysis based on Machine Learning Approaches”, HBRC Journal में प्रकाशित, अप्रैल 2024
- वी. कुमारन, वल्लीबोइना वेंकटेश्वरलू, आर. राजा पांडी, चंद्र शेखर निषाद द्वारा “Hydrodynamic Performance of a Floating Inverted Trapezoidal Breakwater with Permeable Retrofit using Dual Boundary Element Method”, Journal of Offshore Mechanics and Arctic Engineering में प्रकाशित, जून 2024
- प्रताप सिंह सोलंकी, अजय सिंह, शनील साओ, एन. डी. अटकेकर द्वारा “Protection of Research Data and Devices from Malware Attacks using Endpoint Security System in Network”, International Journal of Scientific Research in Network Security and Communication में प्रकाशित, जून 2024

केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान शाला की तकनीकी अनुसंधान रिपोर्ट

- Site visit towards inspection of damages and discussions for undertaking studies for rehabilitation of 10 minor irrigation projects in Ratnagiri District, Maharashtra.
- Cross hole seismic tomography studies at Bhandardara dam, Maharashtra.
- Field data collection for mathematical model studies for hydrodynamics and siltation for Muthalapozhy Fishing Harbour, Thiruvananthapuram District, Kerala.
- Borehole logging for estimation of In-situ density at Bhandardara dam, Maharashtra.
- Site visit to Baglihar H. E. project towards inspection of damages and discussions for undertaking studies for rehabilitation of Baglihar dam, Ramban, J&K.
- Estimation of design flood and water levels along the study reach of Tapi river for the proposed conventional barrage near village Rundh - Bhatha, Surat, Gujarat.
- Mathematical model studies to simulate littoral drift and shoreline changes due to the development at Gurupura Netravati Karnataka.
- Site calibration of ultrasonic flow meters installed at Pench IV water supply project of Nagpur Municipal Corporation.
- Sectional model studies for the existing Balegaon High Level Barrage on river Godavari, Dist. Nanded, Maharashtra.
- Desk studies for the design of coastal protection works at various sites in Ratnagiri, Maharashtra (2020-21).
- Desk studies for the design of protection work for the approach road at Vengurla, Dist. Sindhudurg, Maharashtra.
- Desk studies for the design of protection work at Madh and Gorai in Mumbai suburban, Maharashtra.
- Additional desk & wave flume studies for trunk portion of breakwater section using XBLOC armour units for development of Ramayapatnam greenfield port, Prakasam district, Andhra Pradesh.
- Site inspection report of Lendi Dam, Tal- Mukhed, Dist. Nanded

सेवा निवृत्तियाँ

अ. क्र.	नाम	पदनाम	प्रभाग का नाम	सेवा निवृत्ति की तिथि
1.	श्री एस. एन. सरडे	मानचित्रकार श्रेणी - I	एच.ए.पी.टी.	30.04.2024
2.	श्री एच. वी. पंचाल	मास्टर शिल्पकार	यांत्रिक कार्यशाला	30.04.2024
3.	श्री एन. रमेश	वैज्ञानिक 'ई'	एम.एम.सी.ई.	31.05.2024
4.	श्री ए. सी. कुरियन	निजी सचिव	निदेशक कार्यालय	31.05.2024
5.	श्री के. टी. शल्के	शिल्पकार 'सी'	विद्युत अनुभाग	31.05.2024
6.	श्री डी डी नांगरे	बहुकार्य कर्मचारी वृंद	पंप हाऊस अनुभाग	31.05.2024
7.	श्री बी.आर. भोई	बहुकार्य कर्मचारी वृंद	नदी जलगति विज्ञान	31.05.2024
8.	श्री एल. जी. ठाकर	बहुकार्य कर्मचारी वृंद	निर्माण, क्रय एवं योजना अनुभाग	31.05.2024
9.	श्री एन. के. वहावाल	बहुकार्य कर्मचारी वृंद	कार्यशाला	31.05.2024
10.	श्री एस. बी. इष्टे	बहुकार्य कर्मचारी वृंद	नदी पुनर्जीवन	31.05.2024
11.	श्री एन. जे. खमसे	बहुकार्य कर्मचारी वृंद	बंदरगाह श्रेणी - II	31.05.2024
12.	श्री आर. पी. हगावने	बहुकार्य कर्मचारी वृंद	निर्माण, क्रय एवं योजना अनुभाग	31.05.2024
13.	श्री पी. एम. अब्दुल रहमान	वैज्ञानिक 'ई'	एच.एम.सी.	30.06.2024
14.	श्रीमती माधुरी घोडके	सहायक अभियंता	उपकरण अनुभाग	30.06.2024
15.	श्री रवीन्द्र अष्टिकर	अधीक्षक	बिल अनुभाग	30.06.2024
16.	श्री एम. वी. म्हस्के	चालक श्रेणी -I	निर्माण, क्रय एवं योजना अनुभाग	30.06.2024
17.	श्री पवन कुमार अरोरा	बहुकार्य कर्मचारी वृंद	निर्माण, क्रय एवं योजना अनुभाग	30.06.2024
18.	श्री जगन्नाथ केंगले	बहुकार्य कर्मचारी वृंद	निर्माण, क्रय एवं योजना अनुभाग	30.06.2024
19.	श्रीमती हेमा रोकडे	बहुकार्य कर्मचारी वृंद	निर्माण, क्रय एवं योजना अनुभाग	30.06.2024

नई नियुक्तियाँ

अ. क्र.	नाम	पदनाम	प्रभाग का नाम	नियुक्ति तिथि
1.	श्री रशीद अहमद	अनुसंधान सहायक (अभियांत्रिकी)	कंपन प्रौद्योगिकी	01.04.2024
2.	श्री चिन्नारी निखिल कुमार	अनुसंधान सहायक (अभियांत्रिकी)	सी.एच.एस.	04.04.2024
3.	श्री मूकल गंगवार	अनुसंधान सहायक (अभियांत्रिकी)	सेतु अभियांत्रिकी प्रभाग	05.04.2024
4.	श्री शिवांस बघेल	अनुसंधान सहायक (वैज्ञानिक)	भू-भौतिकी प्रभाग	21.05.2024
5.	श्री प्रियजीत कुंडू	अनुसंधान सहायक (वैज्ञानिक)	भू - तकनीकी अभियांत्रिकी	24.05.2024
6.	श्री हिमांशू यादव	अनुसंधान सहायक (वैज्ञानिक)	सेतु अभियांत्रिकी प्रभाग	16.06.2024
7.	श्रीमती सीता राम मीना	प्रयोगशाला सहायक श्रेणी -II	नदी पुनर्जीवन प्रभाग	13.06.2024
8.	श्री अमित कुमार यादव	मानचित्रकार श्रेणी - I	निर्माण, क्रय एवं योजना अनुभाग	18.06.2024
9.	श्री आशीष कुमार मीना	मानचित्रकार श्रेणी - I	तकनीकी समन्वय	18.06.2024
10.	श्री नितिन वर्मा	अवर श्रेणी लिपिक	बिल अनुभाग	20.06.2024
11.	श्री राजू मलिक	मानचित्रकार श्रेणी - I	निर्माण, क्रय एवं योजना अनुभाग	24.06.2024
12.	सुश्री आंचल कुमारी	अवर श्रेणी लिपिक	प्रशासन अनुभाग	26.06.2024
13.	सुश्री चिंवडे मयूरी	अवर श्रेणी लिपिक	प्रशासन अनुभाग	27.06.2024
14.	श्री यश पाल	अवर श्रेणी लिपिक	प्रशासन अनुभाग	27.06.2024
15.	श्री सुमित कुमार	अवर श्रेणी लिपिक	बिल अनुभाग	28.06.2024

30 जून 2024 को कर्मचारियों की संख्या

अ. क्र.	वर्ग	संख्या
1.	समूह 'क'	156
2.	समूह 'ख' (राजपत्रित)	51
3.	समूह 'ख' (अराजपत्रित)	129
4.	समूह 'ग'	365